RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

CLASS 12th | HISTORY

ARJUN BATCH

विचारक विश्वास और इमारतें

Chapter-4 | Part-3



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

आज क्या पढेंगे ?

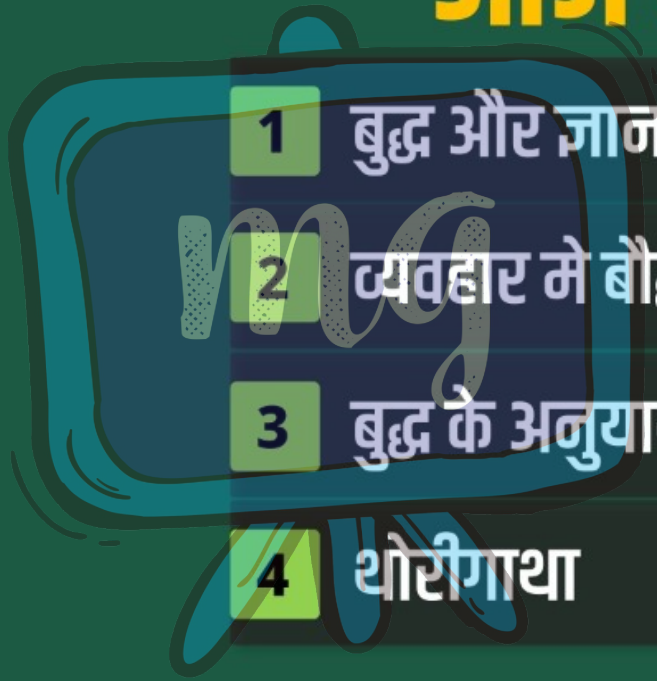

1. बुद्ध और ज्ञान की खोज
2. व्यवहार मे बौद्ध धर्म
3. बुद्ध के अनुयायी
4. थेरीगाथा

बुद्ध और ज्ञान की खोज

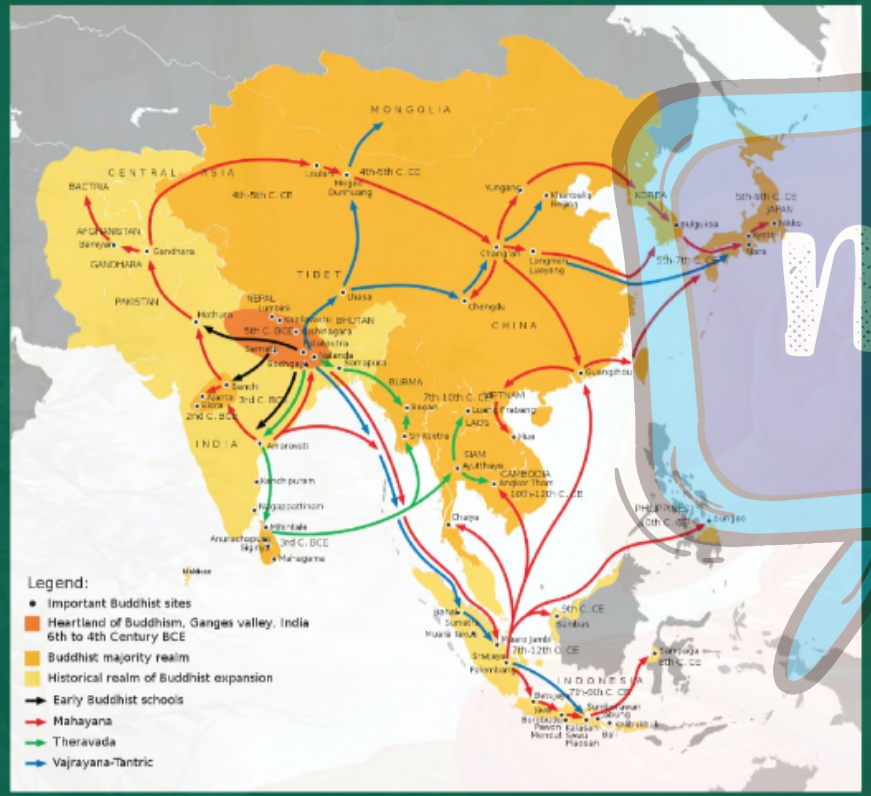

- बुद्ध उस युग के सबसे प्रभावशाली शिक्षिकों में से एक थे।
- सैकड़ों वर्षों के दौरान उनके संदेश पूरे उपमहाद्वीप में और उसके बाद मध्य एशिया होते हुए चीन, कोरिया, और जापान, श्रीलंका से समुद्र पार कर म्यांमार, थाईलैण्ड और इण्डोनेशिया तक फैले।
- बुद्ध की शिक्षाओं को बौद्ध ग्रंथ का बहुत परिश्रम से संपादन, अनुवाद और विश्लेषण कर के जाना गया। इतिहासकारों ने उनके जीवन के बारे में चरित लेखन से जानकारी इकट्ठी की।

संत चरित्र – किसी संत या धार्मिक नेता की जीवनी होती है। जो उसके उपलब्धियों का गुणगान करते हैं, लेकिन यह तथ्यात्मक रूप से पूरी तरह सही नहीं होते।

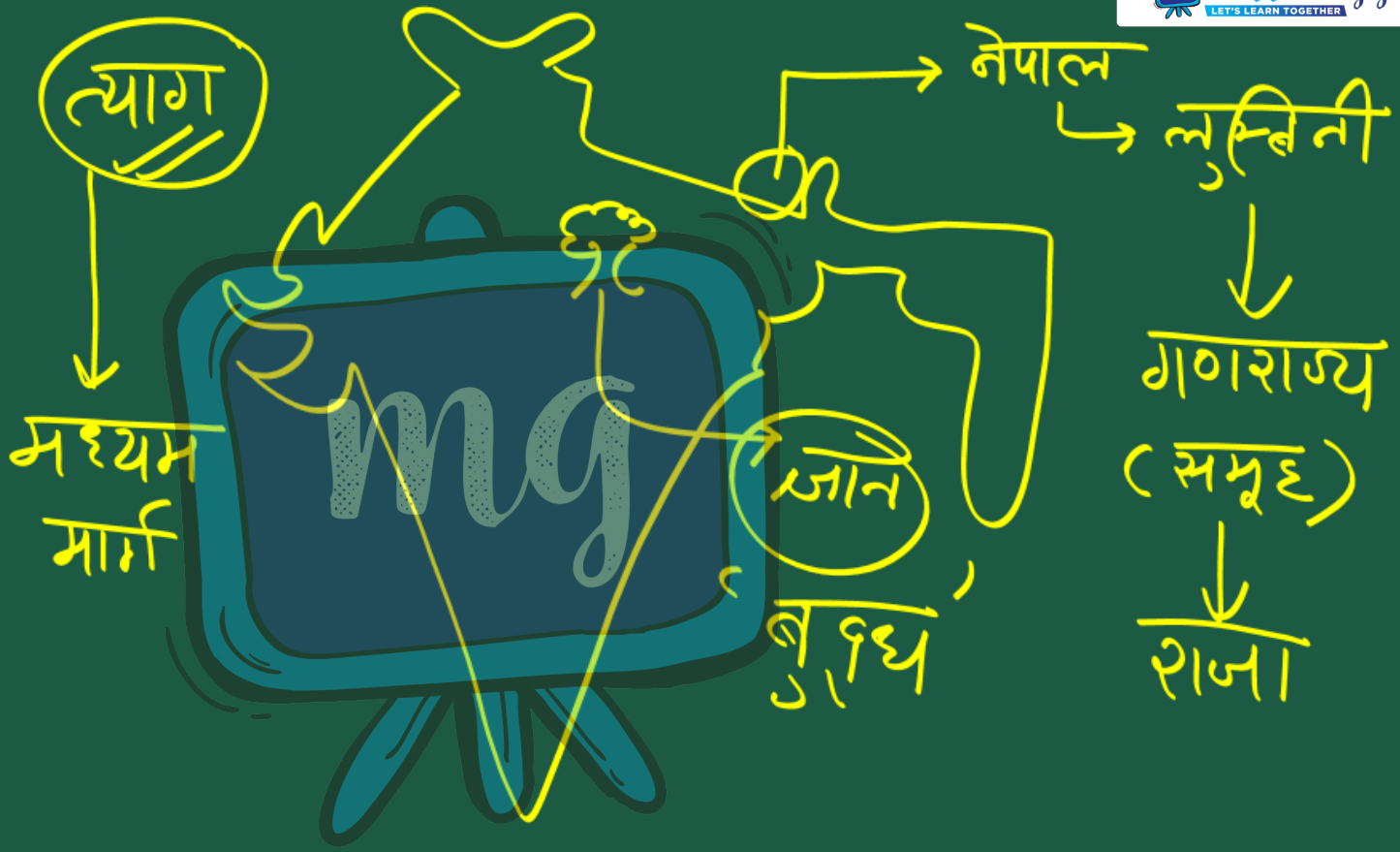
त्याग
मध्यम मार्ग
नेपाल
लुम्बिनी
गणराज्य (समूह)
राजा
ज्ञान
बुद्ध

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

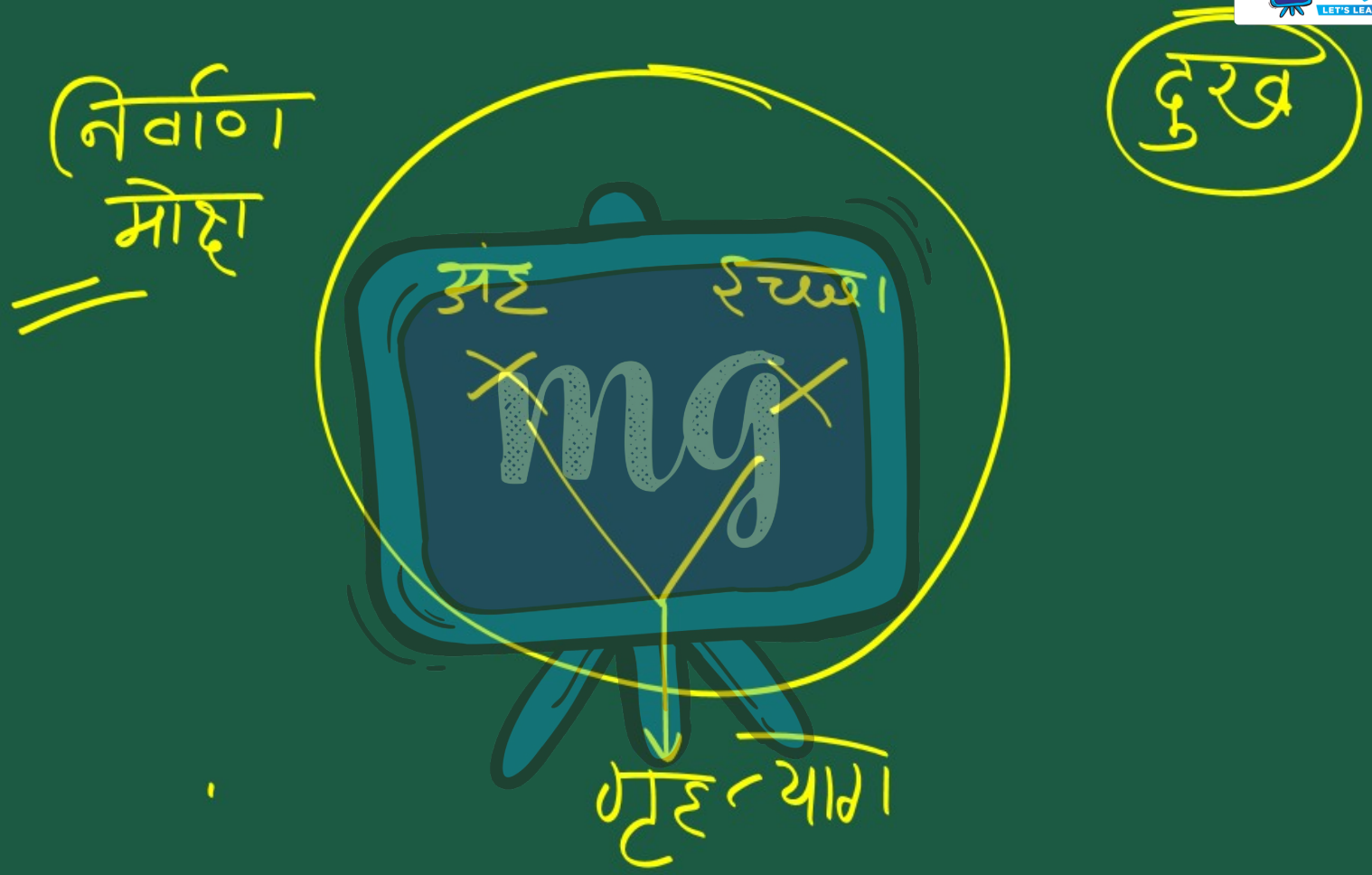

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER





- इनमें से कई ग्रंथ बुद्ध के जीवन काल से लगभग 100 वर्षों के बाद लिखे गये। जिनमें इस महान धर्मोपदेशक की याद को बनाये रखने की कोशिश की गई थी।
- इन परंपराओं के अनुसार सिद्धार्थ (बुद्ध के बचपन का नाम) शाक्य कबीले के सरदार के बेटे थे।
- जीवन के कटु-यथार्थों से दूर उन्हें महल की चारदीवारी के अंदर सब सुखों के बीच बड़ा किया गया।
- एक दिन उन्होंने अपने रथकार को उन्हें शहर घुमाने के लिए मना लिया।
- बाहरी दुनिया की उनकी पहली यात्रा काफी पीड़ादायक रही।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

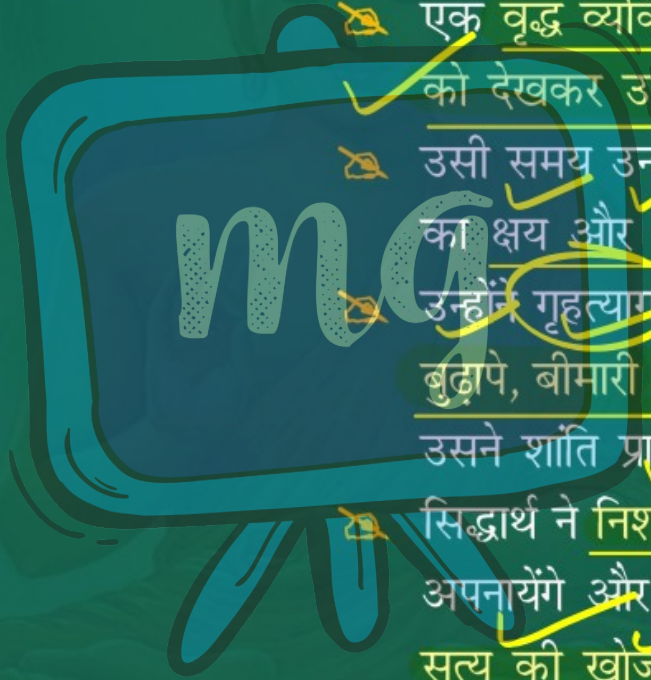

- एक वृद्ध व्यक्ति को, एक बीमार को और एक लाश को देखकर उन्हें गहरा सदमा पहुंचा।
- उसी समय उन्हें यह अनुभूति हुई कि मनुष्य के शरीर का क्षय और अंत निश्चित है।
- उन्होंने गृहत्याग किये संन्यासी को भी देखा उसे मानो बुढ़ापे, बीमारी और मृत्यु से कोई परेशानी नहीं थी और उसने शांति प्राप्त कर ली थी।
- सिद्धार्थ ने निश्चय किया कि वे भी संन्यास का रास्ता अपनायेंगे और कुछ समय बाद वे महल त्याग कर सत्य की खोज में निकल पड़े।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



अमरावती (गुटूर जिला, आंध्र प्रदेश) में लगभग 200 ई. की एक मूर्ति जिसमें बुद्ध को महल से जाते हुए दिखाया गया है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

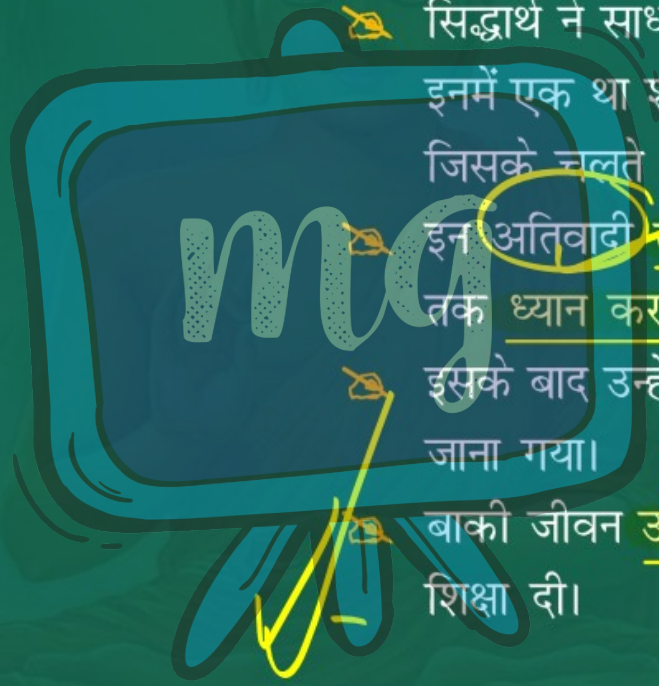

- सिद्धार्थ ने साधना के कई मार्गों का अन्वेषण किया। इनमें एक था शरीर को अधिक से अधिक कष्ट देना जिसके चलते वे मरते-मरते बचे।
- इन अतिवादी तरीकों को त्यागकर, उन्होंने कई दिन तक ध्यान करते हुए अंततः ज्ञान प्राप्त कर लिया।
- इसके बाद उन्हें बुद्ध अथवा ज्ञानी व्यक्ति के नाम से जाना गया।
- बाकी जीवन उन्होंने धर्म या सम्यक जीवनयापन की शिक्षा दी।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

Q जीवन =

जन्म —— निर्वाण

=



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चमत्कार या विवेक !



बुद्ध की शिक्षाऐं

- बुद्ध की शिक्षाओं को सुत्त पिटक में दी गई कहानियों के आधार पर पुनर्निर्मित किया गया है।
- हालांकि कुछ कहानियों में उनकी आलौकिक शक्तियों का वर्णन है।
- दूसरी कहानियां बताती हैं कि अलौकिक शक्तियों की बजाय बुद्ध ने लोगों को विवेक और तर्क के आधार पर समझाने का प्रयास किया।

उदाहरण के लिए :-

- जब एक मरे हुए बच्चे की शोकमग्न मां बुद्ध के पास आई तो उन्होंने बच्चे को जीवित करने की बजाय उस महिला को मृत्यु के अवश्यंभावी होने की बात समझाई।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



* कुछ भी स्थायी नहीं है
* दुख जीवन में अंतर्निहित
* मध्यम मार्ग
* भगवान की अप्रासंगिकता

- ये कथाएं आम जनता की भाषा में रची गई थीं जिससे इन्हें आसानी से समझा जा सकता था।

बौद्ध दर्शन:-

- बौद्ध-दर्शन के अनुसार विश्व अनित्य है और लगातार बदल रहा है, साथ ही यह आत्माविहीन है क्योंकि यहां कुछ भी स्थायी या शाश्वत नहीं है।
- इस क्षणभंगुर दुनिया में दुख मनुष्य के जीवन का अंतर्निहित तत्व है।
- घोर तपस्या और विषयासक्ति के बीच मध्यम मार्ग अपनाकर मनुष्य दुनिया के दुखों से मुक्ति पा सकता है।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

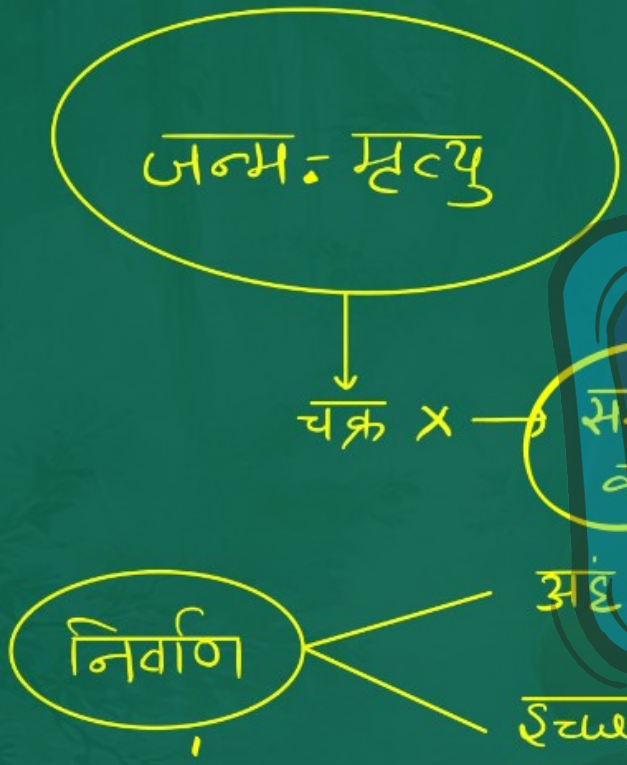

- बौद्ध धर्म की प्रारंभिक परंपराओं में भगवान का होना या न होना अप्रासंगिक था।
- बुद्ध मानते थे कि समाज का निर्माण इन्सानों ने किया था न कि ईश्वर ने। इसलिए उन्होंने राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी।
- उनका मानना था कि व्यक्तिगत प्रयास से सामाजिक परिवेश को बदला जा सकता है।
- बुद्ध ने जन्म-मृत्यु के चक्र से मुक्ति, आत्मज्ञान और निर्वाण के लिए व्यक्ति केन्द्रित हस्तक्षेप और सम्यक कर्म की कल्पना की।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

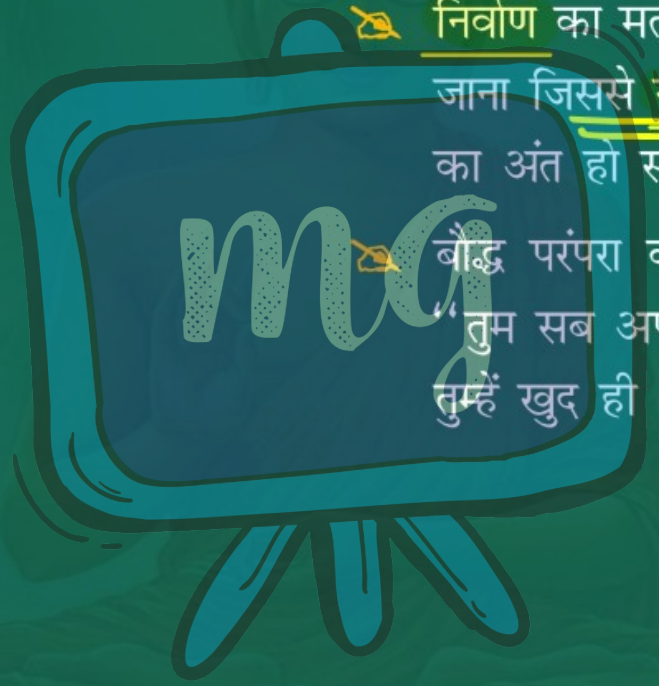

- निर्वाण का मतलब था अहं और इच्छा का खत्म हो जाना जिससे गृहत्याग करने वालों के दुख के चक्र का अंत हो सकता था।
- बौद्ध परंपरा के अनुसार उनका अंतिम निर्देश था, "तुम सब अपने लिए खुद ही ज्योति बनो, क्योंकि तुम्हें खुद ही अपनी मुक्ति का रास्ता ढूंढना है।"

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

१. बौद्ध दर्शन
२. " शिक्षा
३. जीवन का चक्र ?
४. निर्वाण प्राप्त ?



RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

mg missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

व्यवहार में बौद्ध-धर्म

सुत्त पिटक से लिये गये इस उद्धरण में बुद्ध सिंगल नाम के एक अमीर गृहपति को सलाह दे रहे हैं -

☞ मालिक को अपने नौकरों और कर्मचारियों की 5 तरह से देखभाल करनी चाहिए.....

1. उनकी क्षमता के अनुरूप उन्हें काम देकर .....
2. उन्हें भोजन व मजदूरी देकर.....
3. बीमार पड़ने पर उनकी परिचर्या करके....
4. उनके साथ सुस्वादु भोजन बांटकर....
5. समय-समय पर उन्हें छुट्टी देकर.....

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

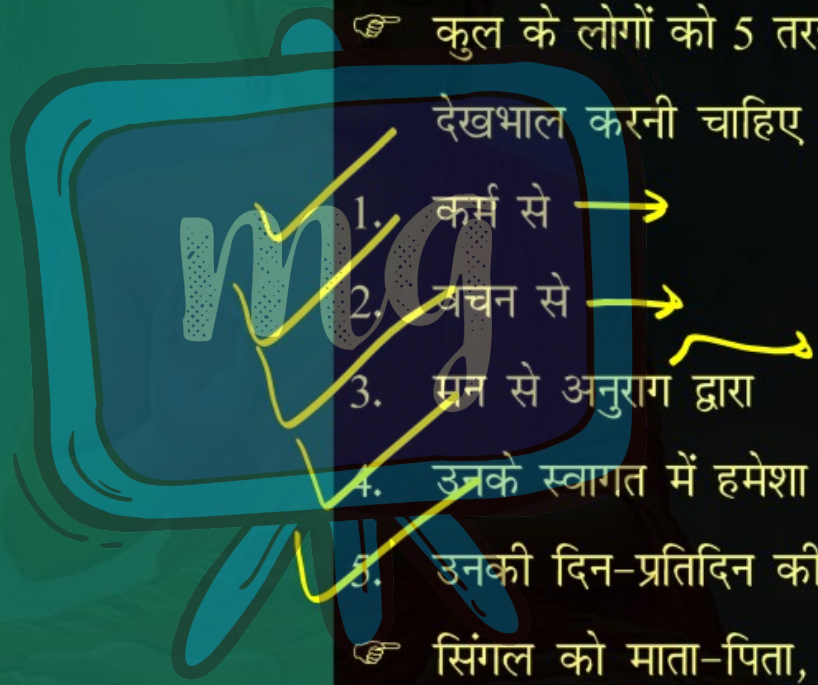

- कुल के लोगों को 5 तरह से श्रमणों और ब्राह्मणों की देखभाल करनी चाहिए –
  1. कर्म से
  2. वचन से
  3. मन से अनुराग द्वारा
  4. उनके स्वागत में हमेशा घर खुले रखकर
  5. उनकी दिन-प्रतिदिन की जरूरतों की पूर्ति करके।
- सिंगल को माता-पिता, शिक्षक और पत्नी के साथ व्यवहार के लिए भी ऐसे ही उपदेश दिये गये हैं।

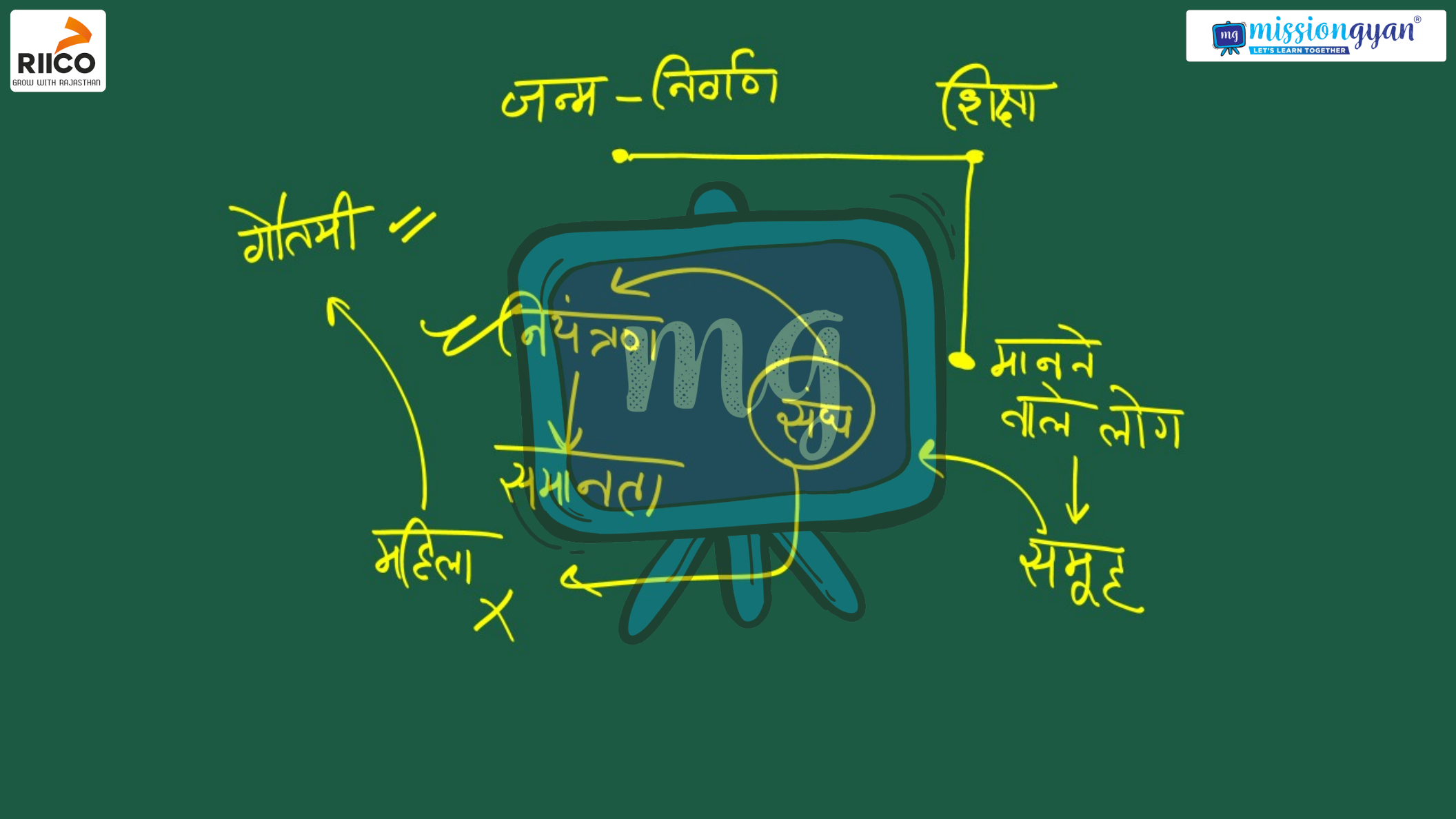
जन्म - निर्वाण
शिक्षा
गौतमी =
नियंत्रण
समानता
मानने वाले लोग
महिला
X
समूह

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

बुद्ध के अनुयायी



- धीरे-धीरे बुद्ध के शिष्यों का दल तैयार हो गया, इसलिए उन्होंने संघ की स्थापना की, ऐसे भिक्षुओं की एक संस्था जो धम्म के शिक्षक बन गए।
- ये श्रमण एक सादा जीवन बिताते थे।
- उनके पास जीवनयापन के लिए अत्यावश्यक चीज़ों के अलावा कुछ नहीं होता था।
- वे दिन में एक बार उपासकों से भोजन दान पाने के लिए वे एक कटोरा रखते थे।
- चूँकि वे दान पर निर्भर थे इसलिए उन्हें भिक्खु कहा जाता था।
- प्रारम्भ में सिर्फ़ पुरुष ही संघ में सम्मिलित हो सकते थे। बाद में महिलाओं को भी अनुमति मिली।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

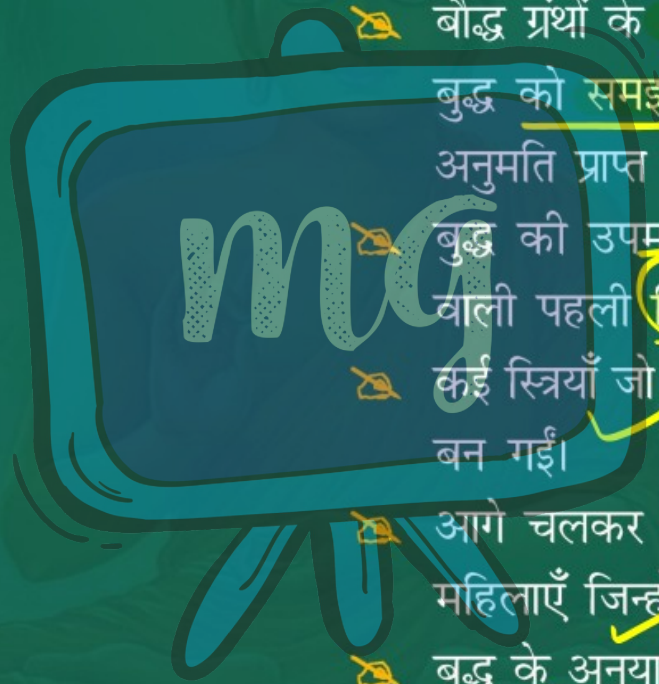

- बौद्ध ग्रंथों के अनुसार बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने बुद्ध को समझाकर महिलाओं के संघ में आने की अनुमति प्राप्त की।
- बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गोतमी संघ में आने वाली पहली भिक्खुनी बनीं।
- कई स्त्रियाँ जो संघ में आईं, वे धम्म की उपदेशिकाएँ बन गईं।
- आगे चलकर वे थेरी बनी जिसका मतलब है ऐसी महिलाएँ जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।
- बुद्ध के अनुयायी कई सामाजिक वर्गों से आए। इनमें राजा, धनवान, गृहपति और सामान्य जन कर्मकार, दास, शिल्पी, सभी शामिल थे।

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- एक बार संघ में आ जाने पर सभी को बराबर माना जाता था क्योंकि भिक्खु और भिक्खुनी बनने पर उन्हें अपनी पुरानी पहचान को त्याग देना पड़ता था।
- संघ की संचालन पद्धति गणों और संघों की परंपरा पर आधारित थी। इसके तहत लोग बातचीत के माध्यम से एकमत होने की कोशिश करते थे। अगर यह संभव नहीं होता था तो मतदान द्वारा निर्णय लिया जाता था।



संघ

१. संघ ?
२. भिक्षु ?
३. थेरी ?
४. प्रिय शिष्य
५. महिला
६. भिक्षु

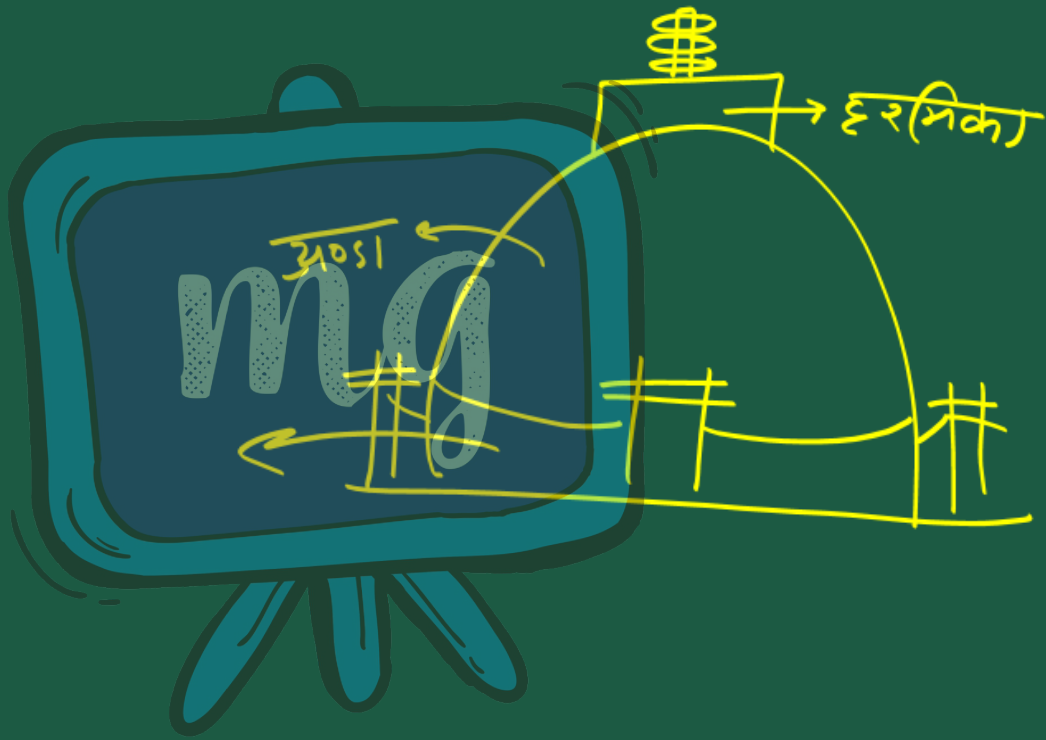
हरमिका
अण्डा